शिव भजन संग्रह

प्रकाशक कल्याणमल एण्ड संस, जयपुर

मूल्य १·०० रुपया

॥ शिवजी का ध्यान ॥

कपु र गौरम् करुणा व तारम् । संसार सारम् भुजगेन्द्र हारम् ।
सदां वसंतम । हृदयार्विंद भवन भवानी सहितम् नमामी ॥

॥ स्तुति शिवजी ॥

जय जय हैं शिव परम पराक्रम, ओंकारेश्श्वम् तुम शरणम् ।
नमामी शंकर भजामी शंकर, हरि हर शंकर, तुम शरणम् ।१।
दस भुज मंडल, पंचवदन, शिव त्रिनयन, शोभित शिव सुखदाम् ।
जटा जूट शिर मुकुट विराजे श्रवणे, कुन्डल अति रमणम् ।२।
ललाट चमकत रजनं नायक, पन्नग भूषन गौरीशा ।
त्रिसूल अंकुस गणपति शोभा, डमरू बाजत ध्वनि मधुरम् ।३।
भस्म विलेपन सर्वांगे, शिव नन्दी वाहन अति रमणम् ।
वामांगे गिरिजा है शोभित, घन्टा बाजत सुर मधुरम् ।४।
मृग चमाम्बर, बाघम्बर, शिव कपाल शोभित गंगेसा ।
पंचवदन पर गणपति शोभा, पृष्ठे गिरिजा, ज्वालेसा ।
सिध्येश्वर, मंगवेसर, शंकर, कपिश्वरे श्री कोटीसा ।
कपिला गंगा निर्मल जल है, कोटि तीर्थ भय हरनम् ।५।
मंगल मूर्ति प्रणवाष्टक शिव, अद्भुत शोभा, मृद भवनम् ।
सन्कादिक मुनि पढ़ते श्रोत्तम, मन वांछित; शिव भय हरणम् ।६।
प्रणवाष्टक यह ध्याय जनेश्वर, रविपति बिमलमः प्रणवाष्टम् ।
तव कृपा त्रिगुणात्मा शिवजीः पतिते पावन भय हरणम ।७।

॥ आरती ॥

जय शिव ओंकारा, हर शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, अर्धांगीधारा ॥ १ ॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजे ।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन छाजे ॥ २ ॥
दो भुज चार चतुर्भुज दश भुजते सोहे ।
तिनहु लोक निरखता त्रिभुवन जन मोहे ॥ ३ ॥
अक्षमाला, वनमाला, मुन्डमाला धारी ।
चंदन मृग मद लेपन, भाले शशिधारी ॥ ४ ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघम्बर अंगे ।
सन्कादिक इन्द्रादिक, भुतादिक संगे ॥ ५ ॥
कर में श्रेष्ठ कमंडल, चन्द्र, त्रिशूल धर्ता ।
जगकर्ता, जगभर्ता, जगनाशन कर्ता ॥ ६ ॥
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, पृथक रूप नेका ।
किन्तु ओंम के मध्य, यह तीनों ऐका ॥ ७ ॥
त्रिगुणात्मक स्वामी की, आरती जो कोई गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी, मन इच्छा फल पावे ॥ ८ ॥

॥ स्तुति ॥

शीश गङ्ग अरधंग पारबती, सदा विराजत कैलाशी ।
नन्दी भृन्गी नृत्य करत हैं, गुण भक्तन शिव की दासी ॥ १ ॥
शीतल मंद सुगंध पवन बहे, बैठे हैं शिव अविनाशी ।

करत गान गंधर्व सप्तसुर राग, रागनी अति गासी ॥ २ ॥
यक्ष दक्ष भैरव तंह विचरत, बोलत हैं बन के बासी ।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भंवरा करत है गुंजासी ॥ ३ ॥
काम धेनु कोटिन जंह डोलत, करत फिरत हैं भिक्षासी ॥ ४ ॥
सूर्यकान्त सम पर्वत सोहत, चंद्रकान्त भौमी वासी ।
छहों ऋतु सब काम करत है पुष्प चढ़त है वर्षासी ॥ ५ ॥
देव मुनिन की भीड़ रहत है, निगम रहे सो नित्य गासी ।
ब्रह्मा विष्णु ध्यान धरत हैं, कुछ शिव हमको फरमासी ॥ ६ ॥
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर, सदा आनंदित सुखरासी ।
जिनका सुमरण सेवा करण से, टूट जाय जम की फांसी ॥७॥
शिव शंकर का ध्यान निरंतर, मन लगाय कर जो लासी ।
दूर होय सब संकट उसके जनम जनम शिव फल पासी ॥८॥

॥ प्रार्थना लावणी ॥

धन्य धन्य भोलेनाथ, तुम्हारे पैसा नहीं खजाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये, आप बसे वीराने में ॥
जटा जूट के मुकुट शीश पर, गले में मुन्डन की माला ।
माथे पर छोटा सा चन्द्रमा, कपाल में करके व्याला ॥
जिसे देखकर भय व्यापे, सो गले बीच लपटे काला ।
और तीसरे नेत्र में, तुम्हारे महा प्रलय की है ज्वाला ॥
पीने को हर भंग रंग है, आक धतूरा खाने को ।
तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे नीम तला में । १ ।

धन्य धन्य भोले नाथ तुम्हारे पैसा नहीं खजाने में।
नाम तुम्हारे हैं अनेक, पर सबसे उत्तम है नंगा॥
वहां से शोभा पाई है, विराजती शिर पर गंगा।
भूत बैताल संग में सोहे, यह लशकर सबसे चंगा॥
तीन लोक के दाता बन कर, आप बने क्यों भीख मंगा।
अलख मुझे बतलाओ क्या, मिलता अलख जगाने में॥
धन्य धन्य भोलेनाथ तुम्हारे, कौड़ी नहीं खजाने में।
यह तो सगुण का स्वरूप है, निर्गुन में तिरगुन हो आप॥
पल में प्रलय करो रचना, क्षण में नहीं कुछ पुन्य और पाप।
चमड़ा शेर का वस्त्र पुराने, बुड्ढा बैल सवारी को॥
जिस पर तुम्हारी सेवा करती, धन्य धन्य शैलकुमारी को।
यों तो थी राजा की पुत्री, ब्याही गई भिखारी को॥
क्या जाने क्या देखा इसने, नाथ तेरी सरदारी को।
सुनी तुम्हारी ब्याह की लीला, भीख मंगे के जाने में॥
तीन लोक बस्ती में बसाये, आप बसे वीराने में।२।
किसी का सुमरण ध्यान नहीं, तुम अपने ही करते हो जाप॥
अपने बीच में आप समाये, आप ही आप रहे हो व्याप।
हुआ मेरा मन मगन, औ सिथली ऐसे नाथ बनाने में॥
तीन लोक बस्ती में बसाये, आप बसे वीराने में।४।
कुबेर को धन दिया आपने, दिया इन्द्र को इन्द्रासन॥
अपने तन पर खाक रमाये, पहिने नागों का भूषन।

मुक्ती भक्ती के दाता होकर, मुक्ति तुम्हारे गहे चरन।
देवीसिंह ने नाथ तुम्हारे हित चित से नित्य करे भजन॥
बनारसी सब कुछ बख्शा अपनी जबां हिलाने में। ५।
तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे वीराने में।

॥ लावणी बड़ी ॥

शिव शंकर कैलाश के वासी, सुनते नाथ सबकी करुणा।
मन की शंका दूर होय, बमभोले नाथ का लेवो शरणा॥
एक दिन दानव सुर सब मिलकर, क्षीर सिन्धु का मथन किया।
चौदह रतन जो निकले, शिरोमणि एक एक सब बांट लिया॥
अमृत धारण कियो देवता जहर हलाहल शिवजी ने पिया।
नीलकंठ जहं नाम धराकर, कैलाश का रास्ता लिया॥
भोले भंडारी शंकर का ध्यान निरंतर नित धरणा। १।
अटल भक्ति भस्मासुर कीन्ही, बारह मास तप करयो करडा॥
अंग आपनो सब अर्पण कीन्हो, कैलाश छोड़ दीन्हा दर्शन।
मंगता है सो मांग भक्त तू, मैं हुआ बहुत तुझ पर प्रसन्न॥
देऊं राज तोहि इन्द्र लोक का, रहे देवता तेरी शरण।
बर देवो मैं हाथ धरुं जिसके सिर ऊपर,

तुरन्त होय उसका मरणा। २।
डिगी नियत वर पा निशचर की, चाहे शंकर को मारा॥
आगे आगे भगे शिवशंकर, वैकुन्ठनाथ का लिया द्वारा।
खगपति चौकी देख नाग भी, उतर गया कौपिन वारा॥

लखत दिगम्बर भेष शंभु का, लक्ष्मी निज मुख पर कर डारा।
ब्रह्मा विष्णु महेश एक हैं, इनमें अन्तर नहीं करणा। ३ ॥
करुणा निधान भगवान विष्णु ने, विरत मोहनी रूप धरे।
मोह लिया निशाचर के मन को, फिर बोले यों वचन खरे ॥
जहर धतूरा पीने वाला, क्या इसका विश्वास करे।
सिर अपने पर हाथ धरे तो, सांच झूंठ की थाह परे ॥
अपने मन में चकित हुवे, तब देख शिव निश्चय मरणा। ४।
रतन जड़ित कैलाश शंभु का, मणि जड़ित झुक रहे छाजा ॥
भांग धतुरा हरि पड़ा, हरि पड़ा, सब पंछी रहते ताजा।
वाहन जिनका स्वेत नांदिया, सब देवन के हैं राजा ॥
कामधेनु और कल्प वृक्ष, नित्य डमरू के बाजे बाजा।
शिवलाल पंसारी दास तुम्हारा लिपटायो, अपने चरणां। ५ ॥

भजन २

शिव भोला भंडारी प्यारों, शिव भोला भंडारी है।
जो कोई दिल से करे तपस्या, वर पावे अति भारी है। टेक।
करी तपस्या दैत्य भस्मासुर वर पाया बलकारी है।
जिसके मत्थे हाथ लगावे भस्म, होय तन सारी है। १।
शिवने वर दे दिया उसीको न, मन में कुछ विचारी है।
उसी दुष्टने शिव के सिर पर, हाथ धरन की धारी है।
ज्ञात हुवा जब शिव शंकर को, लगा दैत्य डर भारी है।
भागे फिरे चहूं दिश शंकर, पीछे भगा असुरारी है।

भगत भगत विष्नु ढिंग पहुंचे, कही बात सब सारी है । २ ।
हाल सुना जब विष्नु देव ने, कहा दैत्य से झूठा शंकर ।
कभी न हो ये वर सच्चा, करो परीक्षा अपने ऊपर ।
मतिहरि भगवान ने उसकी, करी परीक्षा खुद अपनी ।
धरा शीश पर हाथ लगा कंपन शरीर पड़ा धरनी पर ।
छूटा पीछा शिवशंकर का, दैत्यने करणी का फलपायाहै ।
शिव भोले का ध्यान धरे जो, मन इच्छा फल पाता है । ३ ।
ऐसा है ये शंकर भोला, भक्ति मुक्ति का दाता है ।
कैलासी काशी के वासी की, मूरति अति प्यारी है ।
दर्शन करके मन हो अति प्रसन्न, सुखी होय नरनारी है ।
शिव भोला भंडारी प्यारो, शिव भोला भंडारी है । ४ ।

॥ प्रार्थना ॥

शिव शंकर भोले भाले मेरी बिनती सुन लीजो ।
अहर्निस करु ं आपकी सेवा, भक्ति का वर मोय दीजो ॥
भक्ति आपकी करने से; वह मन इच्छा फल पाता है ।
अगर संकट पड़े कोई तो पल भर में टल जाता है ॥
ऐसा शंकर दीन दयाल है, भक्ति मुक्ति का दाता है ।
भक्ति आपकी करने से, वह मन इच्छा फल पाता है । १ ॥
आक धतूरा भोजन आपका, पीने को है प्यारी भंग ।
कैलाश में प्रभु आप बिराजो, गौरा पारवती के संग ॥

पहरे पर है भक्त नांदिया, रहती शीश जटा में गंग।
गजानंद गोदी में आपके, शोभा अति दरशाता है। २ ॥
भक्ति आपकी करने से वह मन इच्छा फल पाता है।
है समान दानव और मानव, दोनों में कोई भेद नहीं ॥
राजी करलो शिव शंकर को वर, पालो कोई खेद नहीं।
नहीं कपट है इनके मनमें, सबसे एक सा नाता है ॥
भक्ति आपकी करने से वह, मन इच्छा फल पाता है। ३ ।
शिव शंकर का ध्यान लगावे, नहीं कुछ चितमें संशय लावे ॥
मन इच्छा वर जल्दी पावे, जिसके जो मन भाता है। ४ ।
भक्ति आपकी करने से वह, मन इच्छा फल पाता है ॥
रामचन्द है शरण तुम्हारी, राखो लाज शंकर त्रिपुरारी।
क्यों करी देर हमारी बारी ॥
क्षमा होय अपराध उसी के, जो शरण आपकी आता है। ५ ।
भक्ति आपकी करने से वह, मन इच्छा फल पाता है ॥

॥ शिव बंदना ॥

प्रभु प्राणनाथं, विभु, विश्वनाथम्,
जगन्नाथ नाथम्, सदानन्द भाजम्।
भवद्भव्य भूतेश्वरम्, भूतनाथम्,
शिव शंकरम्, शंभुनाथं नमामी। १।
गले मुन्ड मालम्, तनौ सर्प जालम्।
महाकाल कालम्, गणेशाधि पालम्।

जटा जूट भंगो तरंगै विशालम् ।
शिवम् शंकरम शंभु, मीशान मीडे ।२।
सुदाभा करं, मंडनम, मंडपंतम ।
महामंडलम, भस्मभूषाधरंतम ।
अनादिं, रथपारं, महामोह मारं ।
शिवम, शंकरम शंभु मीशान मीड़े ।३।
तटा धो निवासम महा ट्टा ट्ट हासम ।
महापाप नाशम, सदा सुख प्रकाशम ।
गिरिशम् गणेशम, सुरेशम् महेशम ।
शिवम् शंकरम, शंभु मीशान मीडे ।४।
गिरिन्द्रात्मजा संग्रहीतार्ध देहं ।
गिरौ, संस्थित, सर्वदा सन्न गेहं ।
पारब्रह्म ब्रह्मादिभिर्वंध्य मानं ।
शिवम शंकरम, शंभुमीशान मीड़े ।५।
कपालं त्रिशूलम्, कराभ्याम दधानम ।
पदांभोजनम्राय, कामं ददानम ।
बलीवर्दयानम सुराणाम, प्रधानम ।
शिवम् शंकरम शंभुमीशान मीडे ।६।
शरचन्द्र गात्रं, गुणानन्द मात्रं ।
त्रिनेत्रम् पवित्रम, घनेशस्य मित्रम ।
अपर्णा कलत्रम, चरित्रम विचित्रम् ।

शिवम् शंकरम् शंभुमीशान मीड़े ।७।
हरं पुष्पहारम् चिताम् बिहारम् ।
भवम् वेदसार सदा निर्विकारम् ।
शमशाने वस्तंम् मनोजम दहंतम् ।
शिवम् शंकरम् शिंभुमीशान मीड़े ।८।
स्तवं, यः प्रभाते नरः शूलपाणे ।
पढ़ते सर्वदा भर्ग भावानु रक्तः ।
स पुत्रम् धनम् धान्य मित्रम् कलत्रम् ।
विचित्रः समासाध्य मोक्षम् प्रयातिः ।

।। भजन ।।

श्री कृष्णचंद्र के दर्शन को चले शिव भोला ।
भस्म अंग पर रमा के, कांधे पर रख लिया भोला।।टेक।।
मृगछाला को बगल दबाये, कर में त्रिशूल लगाये ।
कांधे पर डमरू सुहाये, शंकर के मुख पर पड़ा भंग का गोला ।१।
चले श्री कृष्णचंद्र के दर्शन को भोला ।
जाकर के द्वार पर, शिवने अलख जगाई ।।
भर मोतियन का थाल, यशोदा लाई ।
माता कहे भिक्षा ले, जाओ बम भोला ।।२।।
श्री कृष्ण चंद्र के दर्शन को चले शिव भोला ।
मैं नहीं माता तेरी भिक्षा का मालिक ।।
अंखिया है मोहन के दर्शन की आशिक ।

दर्शन कराय देवो खुशी होय मम चालो ॥३॥
चले श्याम सुन्दर के दर्शन को शिव भोला ।
शंकरजी को माता ने दर्श कराये ॥
दर्शन करने पर श्री कृष्ण मुसकाये ।
मखनलाल कहे सब बोलो बम भोला ॥४॥
चले श्री कृष्ण के दर्शन को भोला ।

॥ लावणी ॥

शिव शंकर ने अमर कथा कही, सुनो ये पारबती ।
हिमाचल में लगा के आसन, बैठे हैं कैलाशपती ॥ टेर ॥
अविनासी कैलाश के वासी, उत्तरा खंड में बसाई ।
बैठ गुफा में पारवतीजी को, अमर कथा यों सुनाई ॥
बेदसार वाणी को सुनकर, उमा के नेत्रों में निद्रा आई ।
वो ही कथा फिर एक तोते, के बच्चे ने सुन पाई ॥
दिया हुंकारा शिवजी को, शिव कहे अर्थ कर समझाई ।
सूआ श्रवण करता था वहां पर, और सोती थी गौरी माई ॥
परम बृज का खेल हुआ, पर उस तोते की बढ़ी रती । १ ।
हुई कथा सम्पूर्ण शिव ने, पारवती को बुलवाया ॥
उठ गौरी ने: कहा नाथ मैंने कुल नहीं सुन पाया ।
फिर शिवजी ने पूछा कि, हुंकारा किसने मुझको सुनाया ॥
और कौन सा जीव यहां पर, कौन विधी करके आया ।
चढ़ा क्रोध शिव शंकर को, हाथ में त्रिशूल को उठाया ॥

उसी वक्त फिर वोह तोते का बच्चा उठ कर के धाया।
दौड़े शिवजी उसके पीछे, वह निकल गया कर सुमति मति ॥२॥
तीन लोक में उड़ा वह तोता, कहीं मिला नहीं ठिकाना।
उड़ते उड़ते बहुत थका वह, अपने मन में घबड़ाना॥
पतिव्रता एक खड़ी स्त्री कर स्नान, तोतेने उसको पहचाना।
दौड़ के तोता गया वहाँ पर, उसके मुख में समाना॥
वहां किसी का जोर चले नहीं, क्यों कर हो उसका पाना।
फिर शिवजी ने दे दिया वरदान, कहा तोता तू अतिश्याना॥
वोही हुये सुखदेव मुनि व्यास, के घड़े भये वह जती सती।३।
अमर कथा का बड़ा महात्मय है, जो कोई इसको सुनने जावे॥
श्रवण करे सो होय अमर, वह कभी नहीं मरने पावे।
चार वेद षट शास्त्र अठारह पुराण, सब इसमें आवे॥
अमर कथा को श्री शुकदेवजी, सदा अपने मुख से गावे।
वह पंडित है बड़ा जो कोई, अमर कथा को सुनावे॥
और दूसरे बोले नाहीं, कुछ मेरे मन में तो भावे।
जिस दिन शिवजी कही कथा, कौन वार तिथि कौन रती ॥४॥
उत्तरा खंड में लगाके आसन, बैठे हैं कैलाश पती।

तर्ज—मानों…जी हरी मोरी बात……

भोले बाबा अंग भभूत रमाय
नाम तिहारो विश्वनाथ है शिर से गंग बहाय
तुम कैलाशी भोले, सर्पो की गल माला डाले

आप ही बाबा शमशानी, औघड़ नाथ कहाय
कामदेव ने तुम्हें सताया, पल में आप ही मार गिराया
बूढ़ा बेल संवारे हरदम, भूतों को अपनाय
कानन कुण्डल तुमको सोहे, तेरा डमरू जग को मोहे
अर्क धतूरा भोग लगे है भक्ति 'हरी' मन भाय ।

भजन

तर्ज—मोहन की मुरलिया बाजे...

शिव शंकर भोले भाले होतुम भक्तों के रखवाले ।
वास तुम्हारा बीच हिमालय जहाँ से गंगा आई ॥
लाल तुम्हारे देव गजावन, संग में गौरी माई ।
डमरू के बजाने वाले हो तुम... ॥
तुम भोले हो औघड़ दानी माथे चन्द्र बिराजे ।
नन्दी गण बाघम्बर सोहे कानन कुन्डल साजे ॥
तोरे नैन बड़े मतवाले हो तुम... ।
शरण तुम्हारी आकर के जो चरनन शीश नवाये ॥
पाकर तेरा दरश सलोना मुक्ति पद को पाये ।
'हरी' लाज बचाने वाले, हो तुम... ॥

॥ प्रार्थना ॥

हम सेवक प्रभो पुकारे हरे ।
ओंकार हरे ओंकार हरे ॥
प्रभु चरणों में शिर धार रहे ।

शीश पर गङ्ग की धारा, सुहावे भाल में लोचन ।
कला मस्तक में चन्दन की, मनोहर हो तो ऐसा हो ॥
भयकंर जहर जब निकला, क्षीर सागर के मथने से ।
धरा सब कंठ में पीकर जो, विषधर हो तो ऐसा हो ॥
सिरों को काटकर अपने, किया जब होम रावण ने ।
दिया सब राज्य दुनिया का, दिलावर हो तो ऐसा हो ॥
किया नन्दी ने जा बनमें, कठिन तप काल के डर से ।
बनाया खास गण अपना, अमर कर हो तो ऐसा हो ॥
बनाये बीच सागर में, तीर पुर दैत्य सेना ले ।
उड़ाये एक ही शर में, त्रिपुहर हो तो ऐसा हो ॥
पिता के यज्ञ में जाकर, तजी तब देह गिरजा ने ।
किया सब ध्वंस पलभर में भयंकर हो तो ऐसा हो ॥
देवता और दैत्यगण सारे, जपें नित नाम शंकर का ।
वो ब्रह्मानन्द दुनिया में, उजागर हो तो ऐसा हो ॥

गजल—प्रार्थना

सदा शिव शम्भु अविनाशी, भजो हरि खरारी को ।
स्मरारी का गजारी को, सुखारी को भिखारी को ॥ टेक ॥
विमल छवि श्वेत-वर अंगा, जटा में है छटा गंगा ।
है निर्मल चन्द्र मस्तक पर, निरख ले मुडंधारी को ॥
लिये कर डमरू है भोला, जमाये भंग का गोला ।
चढ़े नन्दी पै बोडंगी, लिये संग गिरिजा कुमारी को ॥

क्षणे रुद्रा क्षणे तुष्टा तू भजले उस बिहारी को ॥
जिसे श्रीलाल भजते ही, विमल हों मल भरी देही ।
वो दाता ब्रह्मअनन्द का, तू भज उस दुख बिहारी को ॥

प्रार्थना

शंकर तेरी जटा में बहती है गंग धारा ।
काली घटाके अन्दर जिमि दामिनी उजारा ॥ टेक ॥
गल मुंडमाला राजे शशि भाल में विराजे ।
डमरू निदान बाजे कर में त्रिशूल धारा ॥ १ ॥
दग तीन तेज राशि कटिबन्ध नाग फांसी ।
गिरजा है सङ्ग दासी सब विश्व के आधारा ॥ २ ॥
मृग चर्म वसन धारी, वृषभराज पर सवारी ।
निज भक्त दुःख हारी कैलाश में विहारी ॥ ३ ॥
शिव नाम जो उचारे सब पाप दोष टारे ।
ब्रह्मानन्द ना विसारे जब सिन्धु पार तारा ॥ ४ ॥

प्रार्थना कव्वाली

दूर दे दीनों का दुख दूर हो बाघम्बर वाले ।
कर दो सबों का दुख दूर हो बाघम्बर वाले ॥
कोई तो चढ़ावे शिवजी को जल की धारा ।
कोई चढ़ावे कच्चा दूध हो बाघम्बर वाले ॥
हरी २ बेल पतिया चन्दन चावल ।

आगे जब रहा भूल, आपको विसारी ॥ जय० ॥ १ ॥
पहिने उर मुण्ड माल, सुन्दर लोचन विशाल ।
दीन्हें त्रय मुण्ड माल, बाल चन्द्र धारी ॥ जय० ॥ २ ॥
जटा मध्य छटा गङ्ग पारवती वाम अङ्ग
भूषित भूषण भुजङ्ग वृषभ की सवारी ॥ जय० ॥ ३ ॥
डिम २ डिम डमरू बाजे नाचत भूत गण समाज ।
'नारायण' हो रही आज, शोभा अतिन्यारी ॥जय०॥४॥

॥ श्री विश्वनाथाष्टक ॥

दोहा-द्वादश लिंग प्रधान प्रभु, विश्वनाथ महाराज ।
महिमा कहि-कहि जासु गुण, राख्यो सकल समाज ॥
कैलाशवासि नमामि हे प्रभु ! आदि शम्भु सदा शिवम् ।
मुनिरूप चन्द्र अनूप मस्तक जटा जूट सुशोभितम् ॥
यह पापमोचन विमल लोचन वृषभवाहन मोदितम् । १ ।
हर विषम ध्वज कर गहे डमरू व्याघ्र चर्म कलेवरन् ॥
जय भस्म अङ्ग समस्त छाये विश्वनाथ स्वभावकम् ।
पुनि कामदेव सुताड़ियोध्यो नाद बिंदु संयोजकम् ॥
जग जननि गंगा बहति लट सों पांच मुख अघमोचनम् । २ ।
सुरगण सुपूजित भाल शशिवर लोचनं त्रय लोचनम् ॥
इस नगर काशी लिंग द्वादश ज्योतिलिंग विशेषणम् ।
मणिधर फणीन्द्र विराज माला मालती मनमोहनम् ॥
हे धूप दीप निवेदितं प्रभु विश्वनाथ सुशोभितम् । ३ ।

जहँ कनक कलस विराज मन्दिर कानन कुण्डलमण्डितं ॥
अरु मुकुट क्रीट सुचारु मुक्ताकार मुनि मन रंजितम् ।
हे गौर वरण सुगौर शशिधर इन्दु शशिधरि शोभितम् ॥
हे विश्वनाथ सनाथ दीनानाथ सुर मन मोहितम । ४ ।
प्रभु गन्ध मंदहिं शैल बैठहिं योग आसन आसनं ॥
जय मदन दाहक मदनचाहक नाथ मदन सुमोहनम ।
तुम अरध अंग सुअंग धारी शैलजा मन भावनम ॥
प्रभु विश्वनाथ सुक्षत्र धारिन् चरण कमल सुवासनम । ५ ।
करि ध्यान गावे नारदादि बखानै चरित मनोहरम ॥
हर प्राण अखिल कुपात्र दानव भये प्रभु विश्वेश्वरम ।
वह त्रिपुर दैत्य सुदैत्य आदिक लहेउ फल शशिशेखरं ॥
तुमहि छमाकरि निज लोक भेजे महा दुष्ट क्षमाकरम । ६ ।
हे नाथ अपनी बुद्धि दूषण कबहुं नाम मनोहरम ॥
नहिं लिया पामर जाय रह्यो नाथ हे विश्वम्भरं ।
सब जगत कर कल्यान कीन्हों नाम पायसु शंकर ॥
हर मल कुबुद्धि सु विमल बुद्धि दे नाथ हर मम मत्सरं ।७।
धनुबान कर गहि भानु रघुकुल भानु जासु विराजितं ॥
शिव परम भक्त सुभागवत कहि योगिजन जेहि सेवितं ।
करि कर्म पट नहिं सकत लहि वह नाथ देत प्रणामितं ।
प्रभु आसुतोष सुतोष कीन्हों विश्वनामि नमातितं ॥ ८ ॥

* भजन *

शरण में सदा शिव के आये हुये हैं।
करो नाथ रक्षा सताये हुए हैं॥ टेक॥
कैसा बना है वह सुन्दर कैलाश परबत।
जहां आप आसन लगाये हुये हैं॥ १॥
गले में विराजे है सरपों की माला।
उसी का जनेऊ बनाये हुये हैं॥ २॥
संग में रहते हैं भूत प्रेत आदि लाखों।
भयंकर सूरत को बनाये हुये हैं॥ ३॥
करो नाथ दया अब भजन के ऊपर।
बहुत देर से शिर को झुकाए हुये हैं॥ ४॥

॥ प्रार्थना ॥

शिव शंकर भोले भाले, मेरी विनती सुन लीजो।
अहनिंस करु आपकी सेवा, भक्ति का वर मोय दीजो॥
भक्ति आपकी करने से, वह मन इच्छा फल पाता है।
अगर संकट पड़े कोई तो, पल भर में टल जाता है॥
ऐसा शंकर दीन दयाल है, भक्ति मुक्ति का दाता है।
भक्ति आपकी करने से, वह मन इच्छा फल पाता है॥ १॥
आक धतूरा भोजन आपका, पीने को है प्यारी भंग।
कैलाश में प्रभु आप विराजो, गवरां पारबती के संग॥
पहरे पर है भक्त नांदिया, रहती शीश जटा में गंग।

गजानंद गोदी में आपके, शोभा अति दरशाता है ॥ २ ॥
भक्ति आपकी करने से वह मन इच्छा फल पाता है ।
है समान दानव और मानव, दोनों में कोई भेद नहीं ॥
राजी करलो शिव शंकर को, वर पालो कोई खेद नहीं ।
नहीं कपट है इनके मनमें, सबसे एक सा नाता है ॥
भक्ति आपकी करने से वह, मन इच्छा फल पाता है ॥ ३ ॥
शिव शंकर का ध्यान लगावे, नहीं कुछ चित में संशय लावे ।
मन इच्छा वर जल्दी पावे, जिसके जो मन भाता है ॥ ४ ॥
भक्ति आपकी करने से वह, मन इच्छा फल पाता है ।
रामचन्द्र है शरण तुम्हारी, राखो लाज शंकर त्रिपुरारी ॥
क्यों करी देर हमारी वारी ।
क्षमा होय अपराध उसी के, जो शरण आपको आत है ॥ ५ ॥
भक्ति आपकी करणे से वह, मन इच्छा फल पाता है ।

॥ लावणी खड़ी ॥

शिव शंकर कैलाश के वासी, सुनते नाथ सबकी करुणा ।
मन की शंका दूर होय, बमभोले नाथ का लेवो शरणा ॥
एक दिन दानव सुर सब मिलकर, सीर सिन्धु का मथन किया ।
चौदह रतन जो निकले, शिरोमणि एक एक सब बांट लिया ॥
अमृत धारण कियो देवता जहर, हलाहल शिवजी ने पिया ।
नीलकंठ जहं नाम धराकर, कैलाश का रास्ता लिया ॥
भोले भडारी शंकर का ध्यान, निरंतर नित धरणा । १ ।

अटल भक्ति भस्मासुर कीन्ही, बारह मास तप करयो करड़ा ॥
अंग अपनो सब अर्पण कीन्हो, कैलाश छोड़ दीन्हा दर्शन ।
मंगता है सो मांग भक्त तू, मैं हुआ बहुत तुझ पर प्रसन्न ॥
देऊं राज तोहि इन्द्रलोक का, रहे देवता तेरी शरण ।
वर देवो मैं हाथ धरुं जिसके सिर ऊपर,
तुरन्त होय उसका मरण ॥ २ ॥
डिगी नियत वर पा निश्चर की, चाहे शंकर को मारा ।
आगे आगे भगे शिवशंकर, बैकुन्ठनाथ का लिया द्वारा ॥
खगपति चौकी देख नाग भी, उतर गया कोपिन धारा ।
लखत दिगम्बर भेष शंभु का, लक्ष्मी निज मुख पर कर डारा ॥
ब्रह्मा विष्नु महेश एक हैं, इनमें अन्तर नहीं करणा । ३ ।
करुणा निधान भगवान विष्नु ने, विरत मोहनी रूपधरे ॥
मोह लिया निश्चर के मन को, फिर बोले यों वचन खरे ।
जहर धतुरा पीने वाला, क्या इसका विश्वास करे ॥
सिर अपने पर हाथ धरे तो, सांच झूंठ की थाह परे ।
अपने मन में चकित हुये, तब देख शिव निश्चय मरणा ॥ ४ ॥
रतन जड़ित कैलाश शंभु का मणि जड़ित झुक रहे छाजा ।
भांग धतुरा हरि पड़ा, हरि पड़ा सब पंछी रहते ताजा ॥
वाहन जिनका श्वेत नादिया, सब देवन के हैं राजा ।
कामधेनु और कल्प वृक्ष, नित्य डमरू के बाजे बाजा ॥
शिवलाल पंसारी दास तुम्हारा, लिपटावो अपने चरणां । ५ ।

॥ शंकर लहरी ॥

भोला नाथ अमली ओ म्हारा नाथ अमली ।
बागां में भांगड़ली बुवाय गलु ली ॥
कांई बोवूं काशी जी में कांई बोवूं प्रयाग ।
कांई बोऊं हरि की पैडी कांईजी कैलाश ॥ १ ॥
काशीजी में केसर बोऊं, चंदन बोऊं प्रयाग ।
हर की पेढ़ी विजिया बोऊ, धतुरो कैलाश ॥ २ ॥
कांई मांगे नांदियोजी, कांई मांगे गणेश ।
कांई मांगे भोलाशंभु, जोगियां को भेष ॥ ३ ॥
दूर्वा मांगे नांदियोजी, मोदक मांगे गणेश ।
विजिया मांगे भोला शंभु, जोगियारों भेश ॥ ४ ॥
घोटे घोटे नांदियोजी, छानत है गणेश ।
भर भर के गौरां देवे, पीवे छै महेश ॥ ५ ॥
आकड़ा की रोटी पोवे, धतूरा को साग ।
विजिया की तरकारी छमके, जीमें भोलानाथ ॥ ६ ॥
भूखा मांगे अन्न धन्न, राजा मांगे रूप ।
कुष्ठी मांगे निर्मल काया, बांझड़ी मांगे पूत ॥ ७ ॥
भूखा देता अन्न धन्न, राजा ने देवे रूप ।
कुष्टी को देता निर्मल कायरा, बांझड़ी को देवे पूत ॥८॥
नाचे नाचे नांदियोजी, नाचत गणेश ।
ताण्डव गति से नाचे शंभु, जोगियारे भेष ॥ ९ ॥

॥ प्रार्थना ॥

शरण में सदा शिव के आये हुए है।
करो नाथ रक्षा सताए हुए है ॥ टेक ॥
कैसा बना है सुन्दर वो कैलाश पर्वत।
जहां आप भस्मी रमाये हुए हैं ॥ शरण०
गले में विराजे वो सर्पों की माला।
उसी का जनेऊ बनाये हुए हैं ॥ शरण०
संग में विराजत भूत प्रेत आदि लाखों।
भयंकर शक्ल को बनाये हुए हैं ॥ शरण०
करो नाथ कृपा अब रघुनन्दन के ऊपर।
बहुत देर से सिर झुकाये हुए हैं ॥ शरण०

भजन

(तर्ज–रेशमी सिलवार कुर्ता जाली का)

माँगना है जो माँग लो वरदानी से।
शम्भु से चाहे उमा महारानी से ॥
काहे करता मोह दुनिया फानी से।
भज उमा शंकर तू अपनी बानी से ॥
जब जब जिसने माँगा, कोई खाली हाथ न आया।
बादको उनके पीछे, चाहे वह बुरा बन आया ॥
भस्मासुर मानी से ॥ शम्भु० ॥
मांग रहा हूँ भगवन, ना टूटे लगन की लड़ियाँ।

कि हो तुममें हरदम, जुड़ जायें हृदयकी कड़ियाँ ॥
शम्भु भंडारी से ॥ शम्भु० ॥
गर ये औघड़ वरदानी, तो माँ सौभाग्य निधानी ।
हर लेते हैं दुख हरिहर, तो माता सुखकी खानी ॥
जाग अज्ञानी से ॥ शम्भु० ॥
भक्त आपका भटका, मायासे सरल मन अटका ।
ज्ञान का खोलो खटका, कम करो पाप मेरे पटका ॥
शान्ति शिव दानी से ॥ शम्भु० ॥

* भजन *

(तर्ज–नगरी नगरी द्वारे द्वारे ढूँढू (चित्र मदर इंडिया)
तू भोले भाले डमरू वाले, मेरी लो खबरिया ।
भारी लादे सर पर आया, पापों की गठरिया ॥
बेदर्दी दुनियां ने मोहे, फाँसा माया जाल में ।
विषयों की चिनगारी पाई, जीवन के जंजाल में ॥
तिल २ करके छलती जाये, ये मीना बाजरिया । भोले ।
आया हूँ मैं करके भरोसा, दुख दूर हो जाँयगे ॥
जीवन भर के प्यासे नैना, अबतो दर्शन पाँयगे ।
दर २ भटका शंकर आया, हूँ तेरी नगरिया ॥ भोले ॥
स्वामी कार्तिक गणपति, गौरा, नंदी प्यारा संग हो ।
करमें डमरू त्रिशूल सोहै, माथ चंद्र शिर गंग हो ॥
सङ्ग छान बम भोले आवो, देखूँ मैं डगरिया । भोले ।

कर जोड़ नतमस्तक शान्ति, शरण खड़ा हूँ द्वारपर ।।
सेवक स्वामी विनय करते हैं, ऊँचे स्वर से पुकारकर ।
कर देना भवपार मुरारी, हर लेना भँवरिया ।। भोले० ।।

भजन

* तर्ज—बदनाम ना हो जाये *

नर तन सा चोला मूरख वृथा न गमाना ।
शंकर के बस भजन में मन अपना लगाना ।।
दुनियां की मोह ममता सब झूठी समझना ।
माया के मोह में तू हरगिज नहीं आना ।। शंकर ।।
कोई नहीं है किसी का सब झूठा जाल है ।
इस भ्रात के फन्दे को तू मन से हटाना ।। शंकर० ।।
ये हंस भी अकेला जावेगा अकेला ।
तू मैं मेरी में भूला सब है झूँठा बहाना ।। शंकर० ।।
ये माँस और हड्डी भी रह जायगी पड़ी ।
सब खाक में मिलेगी जो चाहे दिखाना ।। शंकर ।।
सब छोड़ कर प्रभू से तू लगन लगाले ।
कैलाश पति को मन में हर वक्त मनाले ।। शंकर० ।।
कट जाँय पाप तेरे सब अगले जनम के ।
फिर उस को महेन्दर ना दिल से कभी भुलाना ।।शंकर०।।

।। प्रभाती भैरवी ।।

देखोरी एक बाला जोगी द्वार हमारे आयो है री ।। टेर ।।

बाघम्बर का ओढ़ दुशाला, शेषनाग लपटाया है री ॥ १ ॥
माथे वाके तिलक चंद्रमा, योगी जटा बढ़ाया है री ।
ले भिक्षा निकली नंदरानी, मोतियन थाल भराया है री ।
जा योगी अपने आश्रम को, मेरा कान्ह डराया है री ॥२॥
ना चाहिये तेरा हीरा मोती, ना चाहिये तेरी माया री ।
तेरे लाल के दर्शन कारण मैं, काशी से आयारी ॥ ३ ॥
ले बालक निकली नंदरानी, योगी दर्शन पाया है री ।
सात बार परिक्रमा करके, सींगी नाद बजाया है री ॥ ४ ॥
सूरदास बैकुण्ड धाम में धन्य, यशोमति माया है री ।
तीन लोक के कर्ता धर्ता, तेरी गोदी आया है री ॥ ५ ॥

॥ शिव भजन ॥

भोलेनाथ से निराला, गौरीनाथ से निराला कोई और नहीं ।
ऐस बिगड़ी के बनाने वाला, कोई और नहीं ॥ १ ॥
उनका डमरू डम डम बोले, अगम निगम के भेद खोले ।
ऐसी भक्तों का रखवाला कोई, और नहीं ॥ २ ॥
माया जब जब करवट बदले, पाप चमकते अगले पिछले ।
ऐसा भक्तों का रखवाला, कोई और नहीं ॥ ३ ॥
तुमने जग का कष्ट मिटाया, मुझको स्वामी क्यों बिसराय ।
अब तो तुझको बचाने वाला, कोई और नहीं ॥ ४ ॥

॥ लावणी ॥

धन्य धन्य भोलानाथ बाँट दिये, तीन लोक एक पलभर में ।

ऐसे दीन दयाल शंभु कौड़ी भी, रखी नहीं अपने घर में ।। टे ।।
प्रथम दिया ब्रह्मा को वेद, वह बना वेद का अधिकारी ।
विष्नु को दे दिया चक्र सुदर्शन, और लक्ष्मी सी सुन्दरी नारी ।।
इन्द्र को दे दई कामधेनु, और ऐरावत सा बलकारी ।
कुबेर को सारी वसुधा देकर, तुमने कर दिया भंडारी ।।
अपने पास पात्र नहीं रक्खा, रक्खा तो खप्पर कर में । १ ।
अमृत तो दे दिया देवताओं को, आप हलाहल पान किया ।।
ब्रह्मज्ञान दे दिया उसे, जिसने कुछ तुम्हारा ध्यान किया ।
भागीरथ को गंगा दे दी, सब जग ने स्नान किया ।।
बड़े बड़े पापियों का तुमने, पलभर में कल्याण किया ।
आप नशे में रहो चूर और, पीते भंग नित खप्पर में ।। २ ।।
रावण को लंका दे दीनी, और बीसभुजा दस शीस दिये ।
रामचन्दर को धनुष बाण और, हनुमान को जगदीश दिये ।।
मनमोहन मोहिनी देदी, मोर मुकुट तुम ईश दिये ।
मुक्ति हेतू काशी में बास, भक्तों को बिश्वेबीस दिये ।।
अपने तन पर वस्त्र नहीं रखते, मगन रहो बाघम्बर में । ३ ।
नारद को दे दई बीन, और गंधर्वों को राग दिये ।।
ब्राह्मणों को दे दिया कर्मकांड, और संन्यासी को त्याग दिया ।
जिस पर आपकी कृपा हुई है, उनको तो अनुराग दिया ।।
देवीसिंह कहे बनारसी को, सबसे उत्तम योग दिया ।
जिसने ध्याया उसीने पाया, महादेव तुम्हरे वर में ।। ४ ।।

॥ शिव स्तुति ॥

जै गिरिजापति दीनदयाल । सदा करत सन्तन प्रतिपाला ॥
भाल चन्द्रमा सोहत नीके । कानन कुण्डल नागफनी के ॥
अङ्ग गौर शिर गंग बहाये । मुण्डमाल तन छार लगाये ॥
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहैं । छवि को देखि नाग मुनि मो हैं ॥
मैना मातुकि हवे दुलारी । वाम अंग सोहत छवि न्यारी ॥
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी । करत सदा शत्रुन क्षयकारी ॥
नन्दी गणेश सोहैं तहं कैसे । सागर मध्य कमल है जैसे ॥
कार्तिक श्याम और गणराऊ । या छवि को कहि जात न काऊ ॥
देवन जबहीं जाय पुकारा तबहीं । दुख प्रभु आप निवारा ॥
किया उपद्रव तारक भारी । देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी ॥
तुरत षडानन आप पठावउ । लव निमेष तहं मारि गिरायउ ॥
आप जलंधर असुर संहारा । सुयश तुम्हार विदित संसारा ॥
त्रिपुरासुर संग युद्ध मचाई । तबहिं कृपा कर लीन बचाई ॥
किया तपहिं भागीरथ भारी । पुरव प्रतिज्ञा तासु पुरारी ॥
दानहिं महं तुम सम कोईनाहीं । सेवक स्तुति करत सदाहीं ॥
वेद नाम महिमा तव गाई । अकथ अनादि भेद नहिं पाई ॥
प्रगटे उदधिमथन में ज्वाला । जरे सुरासुर भये विहाला ॥
कीन्ह दया तहं करी सहाई । नीलकण्ठ तब नाम कहाई ॥
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा । जीत के लंक विभीषण दीन्हा ॥
सहस कमल में हो रहे धारी । कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥

एक कमल प्रभु राखेउ जोई । कमल नयन पूजन चह सोई ॥
कठिन भक्ति देखि प्रभु शंकर । भये प्रसन्न दिए इच्छित वर ॥
जय जय जय अनन्त अविनासी । करत कृपा सबके घट वासी ॥
दुष्ट सकल नित मोहि सतावैं । भ्रमत रहे मोहि चैन न आवैं ॥
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो । यहि अवसर मोहि आन उबारो ॥
ले त्रिशूल शत्रुन को मारो संकट से मोहि आन उबारो ॥
माता पिता भ्राता सब कोई । संकट में पूछत नहिं कोई ॥
स्वामी एक है आश तुम्हारी । आय हरहु अब संकट भारी ॥
धन निरधन को देत सदाही । जो कोई बांचे वो फल पाहीं ॥
अस्तुति केहि विधि करों तुम्हारी । क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ॥
शंकर हो संकट के नाशन । विघ्न विनाशन मंगल कारन ॥
योगी यति मुनि ध्यान लगावें । शारद नारद शीश नवावें ॥
नमो नमो जै नमो शिवाय । सुर ब्रह्मादिक पार न पाये ॥
जो यह पाठ करें मन लाई । तापरहोत है शम्भु सहाई ॥
ऋनियां जो कोई हो अधिकारी । पाठ करे सो पावन हारी ॥
पुत्र हीन करे इच्छा कोई । निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई ॥
पण्डित त्रयोदसी को ध्यावै । ध्यान पूर्वक होम करावे ॥
त्रयोदसी व्रत करे हमेशा । तन नहिं ताके रहे कलेशा ॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे । अन्त वास शिवपुर में पावे ॥
कहे अयोध्या आस तुम्हारी । जान सकल दुख हरहु हमारी ॥

नित नेम करि प्रात ही, पाठ करौ चालीस ।

तुम मेरी मन कामना, पूर्ण करो जगदीश ॥
मगसर छठ हेमन्त ऋतु, सम्वत चौसठ जान ।
स्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन कल्यान ॥

॥ प्रार्थना ॥

जय शंकर परम परमेश्वर, ओंकारेश्वर बम बम बम ।
बामे अंग तेरे गिरिजा विराजत, बाजे डमरू डम डम डम ॥
भूत प्रेत बाबा आगे नाचत, करते हैं छम छम छम ।
कर त्रिशूल खल दल नाशन को, चमक रहे है चम चम चम ॥

॥ प्रार्थना ॥

आ शरण पड़ा हूँ तेरे, हे विश्वनाथ शिव शंकर ।
कर दूर दुःख सब मेरे, गंगाधर हर हर हर हर ॥

(१)

हे करुणा कर कैलासी, हे शंकर शोक नशावन ।
हे विपद विदारन प्यारे, हे अविनाशी मन भावन ॥
हे पाप हरन कामेश्वर, हे सत्य सनातन स्वामी ।
हे भोलानाथ कृपालू, हे अज, हे अन्तर्यामी ॥
आ शरण पड़ा हूँ तेरे, हे विश्वनाथ शिव शंकर ।
कर दूर दुःख सब मेरे, गंगाधर हर हर हर हर ॥

(२)

हे पार्वती पति शम्भो, हे दिव्य ज्ञान भंडारी ।
हे आशुतोष प्राणेश्वर, हे डमरू धर भयहारी ॥

हे परम पिता परमेश्वर, भक्ति के देने वाले ।
हे भूतनाथ भूतेश्वर, रक्षा के करने वाले ॥
आ शरण पड़ा हूँ तेरे, हे विश्वनाथ व शंकर ।
कर दूर दुःख सब मेरे, गंगाधर हर हर हर हर ॥

(३)

हे शशि शेखर अखिलेश्वर, भक्तों के प्राण पियारे ।
पापी के पाप मिटाकर, भवसागर तारन हारे ॥
तुम परम पिता हो मेरे, अपना लो हृदय लगाकर ।
सारे भव दुःख मिटा दो, चरणामृत सुधा पिलाकर ॥
आ शरण पड़ा हूँ तेरे, हे विश्वनाथ शिव शंकर ।
कर दूर दुःख सब मेरे, गंगाधर हर हर हर हर ॥

(४)

मैं दीन दयामय तुम हो, करि दया शरण में लीजे ।
सब दोष क्षमा कर शंकर, निर्मल बुद्धी कर दीजे ॥
निजभक्ति हृदय प्रगटाओ, हे जगद्गुरो अविनाशी ।
करि कृपा शरण में राखो, कैलाशी काशी वासी ॥
आ शरण पड़ा हूँ तेरे, हे विश्वनाथ शिव शंकर ।
कर दूर दुःख सब मेरे, गंगाधर हर हर हर हर ॥

(५)

हैं भक्त आपको प्यारे, तुम हो भक्तों के प्यारे ।
हे भोलानाथ दयामय, सब काज संवारन हारे ॥

हो मुक्ति भक्ति के दाता, नित सेवें मातु भवानी।
तुम को प्रणाम हो लाखों, 'राधे' के गुरुवर ज्ञानी ॥
आ शरण पड़ा हूँ तेरे, हे विश्वनाथ शिव शंकर।
कर दूर दुःख सब मेरे, गंगाधर हर हर हर हर ॥

ॐ नमः शिवाय

॥ शिव वाहन नन्दीश्वर॥

वृषभरूप सुन्दर नन्दीश्वर
शिव गौरी जिनपर असवार।
हैं अपार बलवान सींग,
पर संयम कर रखते अधिकार ॥
श्रोत्र शान्तिमय भीतर बाहर,
चक्षु है विश्वास स्वरूप।
संशय मक्खी सदा उड़ाते,
कान लिये उपदेश अनूप ॥

(२)

श्वास श्वास वेदाक्षर जपता,
ओम आधार मनोहर गात।
सत्य, शौच, तप दया आपके,
चार चरण सुन्दर सुन्दर विख्यात ॥
शिव शंकर के मन्दिर पर भी,
वृषभध्वजा फहराती है।

वृषभ रूप आदर्श धर्म का,
भक्तों को सिखलाती है ॥

॥ शिव मानस पूजा ॥

(१)

हे दयानिधे प्रिय पशुपते,
हे आदि देव महादेव प्रभो ।
पूजोपहार मानस पूजा स्वीकृत हो,
हे जगदीश विभो ॥
मैं रत्न जटित सिंहासन पर,
तुमको भगवान सजाता हूँ ।
शीतल जल से स्नान करा,
मणि भूषित वस्त्र उढ़ाता हूँ ॥

(२)

भर स्वर्ण पात्र नव रत्न खचित,
भोजन मन से बनवाये है ।
बरफी, पेड़े, दधि, दूध, खीर,
पूड़ी, शाकादि जुटाये हैं ॥
हैं कदली फल बढ़िया बढ़िया,
कर्पूर सुवासित जल लाया ।
जोड़ा ताम्बूल मसाला रख,
अति भक्ति भाव से लगवाया ॥

(३)

क्या छत्र सजा, दो चँवर ढुरें,
निर्मल दर्पण अरु पंखा है।
वीणा, दुंदुभि, भेरी, मृदङ्ग,
संग नृत्य गान जय शंख है॥
संकल्प रचे उपहार सभी,
प्रभु भेंट तुम्हारी करता हूँ।
ये स्वीकृत कीजे दयानिधे,
दंडवत फिर फिर करता हूँ॥

(४)

मेरी आत्मा हो शम्भु तुम्हीं,
अरु बुद्धि पार्वती माता है।
ये प्राण आपके गण प्यारे,
मन्दिर शरीर सुखदाता है॥
सब विषय भोग की रचनायें,
पूजा को नाथ तुम्हारी हैं।
निद्रा समाधि है, चलना भी,
शिव परिक्रमा ही सारी हैं॥

* दोहा *

सकल शब्द स्तोत्र हैं, शिव महिमा के गान।
सभी कर्म आराधना, महादेव भगवान॥

(५)

अपराध विहित, अविहिते सभा,
कर्मज्ञ अथवा तन मन के हों।
कर चरण नेत्र, श्रुति वाणी से,
उपकरण पाप बन्धन के हों॥
सब क्षमा कीजिये आशुतोष,
प्रभु ज्ञान नेत्र मेरे खोलो।
करुणा समुद्र श्री महादेव,
शंकर दयालु की जय बोलो॥

(६)

श्री विश्वनाथ कैलास पते,
गौरी वल्लभ की जय बोलो।
कन्दर्प दलन काशी वासी,
शिव अविनाशी की जय बोलो॥
ॐ नमः शिवाय॥

शिवपञ्चाक्षर स्तोत्र (नमः शिवाय)

(१)

है हार गले में सर्पों का,
शुभ नेत्र तीन जिन स्वामी के।
रम रही भस्म है सब तन में,
सुख राशी अन्तर्यामी के॥

है भेष दिगम्बर शुभ्र सदा,
करुणा सागर घट घट वासी।
चरणों में उनके नत प्रणाम,
वह न स्वरूप हैं अविनासी॥

(२)

नहलाकर मन्दाकिनी जल से,
चन्दन अति दिव्य लगाया है।
फिर स्वर्ग पुष्प मन्दार आदि से,
सुन्दर रूप सजाया है॥
जय जय नन्दीश्वर प्रमथ नाथ,
प्रभु शोभा कैसी विस्तारी।
क्या छवि है मेरे महेश्वर की,
मैं म स्वरूप की बलिहारी॥

(३)

मुख कमल पार्वती का जिनके,
दर्शन से विकसित होता है।
कल्याण रूप शिव—सूर्योदय,
मन की मलीनता खोता है॥
श्री वृषभध्वज की दक्ष ताड़ना,
याद सदा मैं रखता हूँ।
अरु शि स्वरूप प्रभु नील कण्ठ के,

जीवन अर्पण करता हूँ ॥

(४)

वाल्मिकी वसिष्ठ कुम्भज गौतम,
मुनि श्रेष्ठ और सुर इन्द्र सभा ।
जिनके मस्तक की पूजा कर,
नहीं विफल मनोरथ होय कभी ॥
दृष्टि त्रिनेत्र रवि चन्द्र अग्नि से,
ताप भक्त के जो खोयें ।
उन वे स्वरूप शिव शंकर को,
मेरे प्रणाम हर दम होवें ॥

(५)

प्रभु यक्ष भेष में शोभित,
क्या जटा जूट की छवि न्यारी ।
कर में पिनाक को ग्रहण किये,
है भयहारी मङ्गल कारी ॥
अति दिव्य दिगम्बर अजर अमर,
अभिमत के दाता उपकारी ।
चरणों में अगणित हों प्रणाम,
मैं ये स्वरूप को बलिहारी ॥

(६)

जो इस पवित्र पंचाक्षर को,

शिव के समीप में जपता है।
वह शिव संग मौजें करने को,
शिवलोक स्वर्ग में रहता है॥
स्तोत्र श्रेष्ठ शिव पंचाक्षर,
शंकरचार्य जो गाया है।
उसका भाषान्तर हिन्दी में,
रचि राधे लाल सुनाया है॥
ॐ नमः शिवाय॥

॥ शिव दर्शन चालीसा ॥

श्री गणेशाय नमः॥ परमोज्वल भंडार।
ज्ञान के लोचन तीन भक्त अभिराम॥
भाल चन्द्र कल्याण प्रदाता शिव हर।
बारम्बार प्रणाम॥ ॐ नमः शिवाय॥
श्री शंकरः शंकररोतु

(१)

सब शिव भक्तों को करि प्रणाम,
हम शिव का ध्यान लगाते है।
हर-प्रेम-गंग में करि करि मज्जन,
मन शंकर भक्ति जगाते है।
जब हुआ ज्ञान रवि उदय, भाग्य से,
उर पंकज परकाश मिला।

श्री विश्वनाथ बाबा के दर्शन,
का सुन्दर अवकाश मिला।

(२)

जा पहुंचा तब कैलास बीच,
पाता प्रमोद दिल खिलने का।
हो ध्यानावस्थित शम्भु नाथ,
रहे बता मार्ग निज मिलने का।
बैठे हैं सुन्दर व्याघ्र चर्म पर,
जटा जूट को मुकुट किये।
जिसमें विराजती गंगा जी,
भक्तों को वरदान लिये।

(३)

मस्तक पर सोहे चन्द्र द्वितीया-
का सब दुख हरने वाला।
श्री नीलकण्ठ करुणा समुद्र की,
सदा शरण रहने वाला।
है चन्द्र सूर्य भक्तों के विघ्न काटते,
शान्ति शौर्य जंग को देते।
प्रिय शिव भक्तों के विघ्न काटते,
मंगल मूर्ति बना लेते।

(४)

है नेत्र तीसरा अग्नि स्वयं,
खुलते ही खाक बनाता है।
आसुरी शक्ति से संतों की,
पल भर में जान बचाता है।
है गले मुण्डमाला सुभगा,
कर में त्रिशूल वरदान सभी।
जब भक्त माँग कुछ करता है,
करते उसका कल्यान तभी।

(५)

देखा जगदम्बा आदि ज्योति,
गौरा जी करती सेवा हैं।
गोदी में बैठे श्री गणेश,
जो सिद्धि बुद्धिपति देवा हैं।
है धर्म रूप नन्दी बैठे,
सम्मुख में सौम्य मूर्ति धर के।
इनकी किरपा के बिना नहीं,
होते दर्शन शिव शंकर के।

(६)

कर रहे प्रतीक्षा आज्ञा,
सेनापति शोभा पाते हैं।

ब्रह्मा जी वेद गान करते,
संग तुम्बरु वीणा बजाते हैं।
यों विश्व मूर्ति प्यारे शिव का,
है सर्व श्रेष्ठ दरबार खुला।
फैसला फरियादें करते हैं,
सुर असुरों की धरि धर्म तुला।

(७)

यह बड़े धैर्य का अवसर है,
यदि ध्यान कहीं यहाँ ना ठहरे।
तो ब्रह्म के दर्शन छूटि जांय,
माया की दुनिया आ घेरे।
कर दिया समर्पण पूर्ण रूप से,
आत्मा जब श्री चरणों में।
तब मधुर मधुर सुनने में आई,
वाणी मेरे करणों में।

(८)

तेरी दर्शन की अभिलाषा,
मैं जानूं थाहै बड़ी प्रबल।
प्रतिक्षण तू सोचता रहता था,
जग दुःख भंवर से चलूं निकल।
मैं अपना रूप बता प्यारे,

सब बात तुझे समझता हूँ।
तेरे चित में उत्साह अमित की,
ज्योती अभी जगाता हूँ।

(९)

ये वृषभ जो यहां सवारी,
दे भक्तों को उपदेश रही।
सब और सवारी हैं निर्बल,
है प्रबल सवारी धर्म यही।
दश चिन्हों सहित इसे साधो,
है अजर अमर बलवान।
इच्छानुसार पहुंचावेगा,
दिखला तुम को कर्तव्य सदा।

(१०)

है और सवारी क्षण भंगुर,
कितनी त्रुटियां उनमें पड़ती।
पर अविनाशी यह परम सवारी,
सदा चमकती ही रहती।
जब धर्म पै हो आरूढ़ चतुर नर,
कोई काम उठाता है।
दे छोड़ भरोसे तेरे पर,
तो विजय सदा ही पाता है।

(११)

उसके विश्वास की दृढ़ता को,
मैं बीच बीच अजमाता हूँ।
जब जानूं सच्चा वीर व्रती है,
सिद्धि विभूति लगाता हूँ।
मेरे चरणों का अभिलाषी,
जब आस धर्म की करता है।
शिर उसके चिन्ता मय वन से,
जल शान्ति गंग का झरता है।

(१२)

जब सिर पर पड़ भारी भारी,
चिन्तायें जटा बनाती हैं।
मम कृपा रूप शुभ शान्ती की,
गंग उनमें लहराती हैं।
आनन्द रूप हो भक्त मेरा,
तब जग में जहाँ विचरता है।
मस्तिष्क से निकले जो विचार,
सब की तृप्ति ही करता है।

(१३)

उसका दर्शन दुख नाश करे,
और आशाओं से भरता है।

ये चन्द्र द्वितीया का जैसे,
मेरे ललाट का करता है।
कर क्रोध भाव को रोक सदा,
तुम मेरा ही प्रिय ध्यान धरो।
मूंदे रखता हूँ प्रलय नेत्र,
देखो ऐसा आचरण करो।

(१४)

और नाग भयंकर विषयों के,
जो चित्रादिक से लिपटे हैं।
इनसे तुम खाना खौफ नहीं,
कितने मेरे भी चिपटे हैं।
जो भक्त मेरे है मग्न सदा,
रखता मेरी ही आशा है।
उससे रक्खें ये मित्र भाव,
सब उसके लिये तमाशा है।

(१५)

और काल रूप ये नाग वासुकी,
हाथ हमारे रहता है।
इसकी भी चिन्ता दूर करो,
बिन समय नहीं कुछ करता है।
मुझको देखो मैं निज शरीर,

सर्पावृत कर दिखलाता हूँ।
मरने का डर प्रिय भक्तों का,
करके उपदेश छुड़ाता हूँ।

(१६)

हो भूति नाश से कभी न दुख,
मेरी इच्छा से होता है।
बिन मेरी कृपा विभूति के,
वह निश्चय ही सब खोता है।
मैं ही सबके पुरुषार्थों का,
फल समझ बूझ कर देता हूँ।
पर अभिमानों की भस्म भेंट मैं,
भक्तों से ले लेता हूँ।

(१७)

पी करके गरल भयंकर को,
देवों की जान बचाई है।
मानों दुख रूप जहर खोना,
भक्तों को नीति दिखाई है।
परहित में दुख के घूंट मिलें,
या पड़े व्याधियाँ हे प्यारे।
हो शान्त जहर सा पी जाना,
निश्चय कर नहीं तुझे मारे।

(१८)

कर रक्षा संतों की हरदम में,
सुरत्राता कहलाता हूँ।
उप देशक सब सृष्टि का हो,
उपकार मार्ग सिखलाता हूँ।
हो व्याकुल जब दुष्कर्मों से,
कोई दीन शरण में आता है।
फल उसके पापों का हल्का,
बस सुमिरन से हो जाता है।

(१९)

की विनय प्रभू के चरणों में,
रहे दया तुम्हारी हे स्वामी।
हो जगतपिता सबके कर्त्ता,
घट घट वासी अन्तर्यामी।
ये माला है क्यों मुण्डों की,
इसका कारण तो कह दीजे।
यदि मुण्ड पियारे तुम को हैं,
तो मेरा भी शिर यह लीजे।

(२०)

हंस कर बोले तब शिव शंकर,
अति गूढ प्रश्न यह तेरा है।

तुझको बतलाता कारण हूँ,
सब भांति भक्त तू मेरा है।
मैं अपने प्रिय का मुण्ड भला क्या,
भाग्य दृष्टि में रखता हूँ।
और उसमें परिवर्तन नित ही,
उसकी इच्छा से करता हूँ।

(२१)

देख मेरे हैं डमरू त्रिशूल,
खट्वाङ्ग आदि जो हाथों में।
इनकी छाया मङ्गल त्रिताप,
वैभव हैं जग पुरुषार्थों में।
सब भोगों की कल हाथ यहां,
मैं एक सर्वशक्ति वाला।
हूँ सब का स्रोत आधार भी हूँ,
और हूँ नाश भी करने वाला।

(२२)

फिर किया निवेदन चरणों में,
ये उत्सुकता है चित्त बसी।
क्यों पूजा और कथा भगवन्,
हैं अद्भुत और असम्भव सी।
क्यों कर स्वीकार करो पूजा,

कैसे प्रसन्न हो जाते हो।
रहते अदृश्य हो जब जग से,
किस तरह बुलाये आते हो।

(२३)

बोले परमेश्वर हे प्यारे,
यद्यपि अदृश्य मैं रहता हूँ।
पर भक्त जानते उसको हैं,
जो करता हूँ या कहता हूँ।
सांसारिक जीवों के हितार्थ,
मेरी आज्ञा से मुनियों ने।
मन के आकर्षण और एकाग्र को,
कथा चलाई कइयों ने।

(२४)

मन हटा जगत जंजालों से,
जो मुझको ध्यान लगाते हैं।
मुझ अदृश्य की पूजा को भी,
वो सम्भव कर दिखलाते हैं।
यद्यपि तर्कों से रहूँ अगम,
पर भक्तों से मिल जाता हूँ।
निज कथा अलौकिक लता बीच,
हो प्रेम पुष्प खिल जाता हूँ।

बिन कृपा अनुग्रह मेरी के,
सुख शान्ति नहीं मिल सकता है।

[३०]

जब भक्ति में भर दास कहीं,
लोटा भर जल ले आता है।
निज जीवन धार स्वरूपी को,
मेरे पर आन चढ़ाता है।
मैं हो प्रसन्न उसको अकाल,
मृत्यु से सदा बचाता हूँ।
सुन नाद बम्ब, बं, बं, बं का,
जीवन अति सुखी बनाता हूं।

[३१]

प्रिय भक्त जो मुझे चढ़ाता है,
अपना गौरव रूपी चन्दन।
वर दे देता हूँ पायेगा, पृथ्वी पर,
तू वांछित साधन।
अक्षत धन धान्य रूप अपना,
मेरे अर्पण जो करता है।
सम्पत्ति चौदह भुवनों की,
मेरी इच्छा से लेता है।

[३२]

शुभ पुष्प रूप यौवन अपना,
जो मेरी भेंट चढ़ाता है।
जीवन आनन्दित पाकर के,
दीर्घ आयु मौज उड़ाता है।
और धूप दीप यश ज्ञान रूप,
जो मुझे समर्पण करता है।
अज्ञान तिमिर वह सप्त द्वीप,
अपने प्रकाश से हरता है।

[३३]

जो गा गा कर महिमा मेरी,
बेल पत्री मुझे चढ़ाता है।
कर पूर्ण रूप दर्शन मेरा,
मुझ में आ वह मिल जाता है।
जब प्रेम भाव में मग्न भक्त,
हर हर की रटन लगाता है।
इच्छानुसार अपने समीप,
मुझको हरदम पाता है।

[३४]

जो गाल बजावे उसको भी,
दिन की पुकार सुन लेता हूँ।
अपने प्रसाद से मैं उसको,

पूरा निहाल कर देता हूं।
हैं भक्त हमारे पुत्र रूप,
भाई सा प्रेम बरतते हैं।
है तीन लोक में घर उनका,
मन चाहे जहाँ विचरते हैं।

[३५]

हो विम्ब हमारी भक्त–आत्मा,
ध्यान हमारा धरती है।
उसकी बुद्धि बन पार्वती भी,
मेरी सेवा करती है।
हो देह भक्त मेरा मन्दिर,
कैलास वही बन जाता है।
आनन्द सभी रस भोगों का,
मेरी पूजा में आता है।

[३६]

सुन कर ये परम दिव्य बाणी,
मन आनन्द झूला झूल गया।
पा मुक्ति जगत के कष्टों से,
हो शान्त अशान्ति भूल गया।
जय बोलो माता पार्वती की,
पिता महेश्वर देवा की।

जय बोल राधे लाल प्रेम से,
भक्तों की भव सेवा की।

[३७]

हे शंकर विषय भोग रचना,
सब ही पूजा अनुरूप रहें।
चलना फिरना भी सारा ही,
प्रभु परिक्रमा का रूप गहे।
ये प्राण सभी हर गण होवें,
और बुद्धि पार्वती माता हो।
हो ध्यान आपके चरणों का,
सत संग सदा सुख दाता हो।

[३८]

जो शब्द निकलता मुख से है,
वह करे आप का आराधन।
जो कर्म करूं इन्द्रिय गण से,
वह बँधे आप के अनुशासन।
जो किये पूर्व अपराध प्रभो,
उनको कृपालु माफी देना।
हे पार्वती पति महादेव,
कर दया शरण अपनी लेना।

[३९]

ये क्लेश कष्ट और पाप दुख,
माया ने जो प्रगटाये हैं।
अब डुबा इन्हें हर-प्रेम गंग,
करुणा समुद्र की जय बोलो।
शिव पार्वती हो ज्ञान भक्ति,
उर के कैलाश विहार करें।
राधे नर जीवन सार्थक हो,
गौरी शंकर की जय बोलो।

[४०]

श्री विश्वनाथ कैलाश पति,
गिरिजा बल्लभ की जय बोलो।
कन्दर्प दलन काशी वासी,
शिव प्रेम सुलभ की जय बोलो।
हर ज्ञान रूप हो हृदय विराजें,
करो दरस अंखिया खोलो।
उन परमेश्वर करुणा सागर की,
श्वास श्वास में जय बोलो॥

ॐ नमः शिवाय॥

* समाप्त *

मोती प्रिन्टर्स हनुमान का रास्ता, जयपुर-३

हमारे यहाँ पर मिलने वाली पुस्तकें